मैथिलीशरण गुप्त के काव्य 'भारत भारती' में राष्ट्रवाद

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

भारतीय काव्य परम्परा उस भाव प्रधान रही है। इसी कारण एक समीक्षक प्रत्येक काव्य रचना को रस और भावों की व्यंजना के आधार पर परखता है। यदि इस परम्परा के आधार पर 'भारत भारती' काव्य रचना के वर्तमान खण्ड को परखा जाए तो स्थिति समझ आ जाएगी। कारण यह है कि इस काव्य कश्ति के किसी भी खण्ड की रचना रसाभिव्यक्ति और पाठक को आनन्द लोक में पहुंचाने के उद्देश्य से नहीं हुई है। इसके वर्तमान खण्ड में तो कवि ने अपने युग की समस्याओं के प्रति सजग रह कर उन समस्याओं को उठाया है, कवि ने इस कुशलता से अपने युग की भावनाओं को वाणी देने में समर्थ हुआ है कि काव्य में चित्रित भावनाएं युग की वाणी बन गई है। कवि ने वर्तमान खण्ड में हिन्दू जाति के नैतिक पतन, बुद्धि और शौर्य का, अपकर्ष का विस्तार से वर्णन किया है। इसलिए उसकी भूमिका के रूप में अतीत खण्ड के अंत में दयनीय दशा को भी चित्रित कर दिया है। वह इस खण्ड का आरम्भ ही स्थिति का आकलन किया गया है–

जिस लेखनी ने है लिखा उत्कर्ष भारत वर्ष का,
लिखने चली अब हाल वह उसके अमित अपकर्ष का!
जो कोकिल नन्दन–विपिन में प्रेम से गाती रही,
दावाग्नि–दग्धारण्य में रोने चली है अब वही।।

जब कवि ने लगभग 1912 में लिखना शुरू किया था तब इसमें कवि ने हिन्दुओं के स्वर्णिम और वैभव की अपेक्षा में वर्तमान की हीन दशा का वर्णन किया है। यही कारण है कि वर्तमान खण्ड में वर्णित भारत आज के भारत की तुलना में सर्वथा भिन्न था। उस समय देश पर अंग्रेजों का आधिपत्य था और उसके द्वारा भारतीय उद्योगों धंधों को अपने लाभ के लिए समाप्त करना, भारत का धन विदेशों को भेजना और अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल कोड़ियों के भाव खरीदकर, वहां तैयार माल को यहां खपा कर अत्य अधिक लाभ कमाना उद्देश्य था। इसलिए हिन्दुओं का मनोबल टूट चुका था, उनकी जीवन शक्ति लुप्त प्रायः हो गई थी। धार्मिक दृष्टि से भी यह समय सर्वथा अनुकूल न रह गया था। लोग मनमाने ढ़ंग से धर्म की व्याख्या कर रहे थे। यहां अनेक पंथ अस्तित्व में आ गये थे जिसके कारण अकर्मण्यता फैली हुई थी। जनता दुखी, संत्रस्त एवं निर्धन थी। भारत भारती के वर्तमान खण्ड में इस सारी स्थिति का विस्तार से दिखलाया गया है। कवि ने कहा है–

दारिद्रय दुर्धर अब वहां रहा करता निरन्तर नृत्य है
आजीविका अलवम्ब बहुधा भृत्य का ही कृत्य है।

इस दारिद्रय कारणों का भी वर्णन काव्य में किया है। इसका पहला कारण तो कवि ने निरन्तर पड़ने वाले दुर्भिक्ष को बताया है। इन अकालों के कारण एक तो अन्न कम उत्पन्न होता है जिसके कारण लोगों को पेट भरने के लिए अन्न नहीं मिलता और बड़ी संख्या में लोग भूख से मर रहे हैं। जनता की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। वे एक

मुट्ठी अन्न के लिए घर घर जा कर भीख मांगते हैं। लोग भूख से व्याकुल होकर अपना धर्म परिवर्तन कर विदेशों में जा कर बस रहे हैं। कवि इसका वर्णन करता हुआ लोगों के भावों को अभिव्यक्ति देता हुआ कहता है–

हे धर्म्म और स्वदेश! तुमको बार बार प्रणाम है,
हा! हम अभागों का हुआ क्या आज यह परिणाम है।
हमको क्षमा करियो, क्षुधावश हम तुम्हें हैं खो रहे
होकर विधर्म्मी करियो, हाय! अब हम हैं विदेशी हो रहे।

अतः किसानों की दुर्दशा पर भी कवि ने अपने भाव विचार व्यक्त किये हैं। कृषि और दुर्दशा का कारण भूमि को उर्वरा शक्ति का कम होना, सिंचाई के साधनों की कमी, कठोर परिश्रम करने के बाद भी पेट भर भोजन किसानों को नहीं मिलता है क्योंकि कभी सूखा पड़ता है तो कभी अति वृष्ट होती है। इस तरह से राष्ट्र में सब कुछ नष्ट हो जाता है और यदि उपज अच्छी हो भी गई तो सारा अनाज ऋण के बदले महाजन ले जाता है। इसके साथ ही गो वध, व्याधियां व्यापार पर भी अपने भावों विचारों को अभिव्यक्ति दी है। देश का उद्योग नष्ट हो गया है और सारी वस्तुएं विदेशों से बन कर आती हैं जिस से सारा धन विदेशों को चला जाता है। इस प्रकार व्यापार की दशा के सम्बन्ध में कवि कहता है और राष्ट्र की स्थिति को भी स्पष्ट कर देता है–

लेकर विदेशी टीन हम सानन्द चांदी दे रहे,
दे कर तथा सोना निरन्तर हैं गिलट ले रहे।
हम कांच लेकर दूसरों को दे रहे हीरे खरे,
निज रक्त के बदले मदोद्क ले रहे हैं, हा हरे।।

इस सम्बन्ध में यह कथन देखिए–'राष्ट्रीय भावना का विकास, सांस्कृतिक चेतना की जागृति से राष्ट्रवाद की भावना बढ़ती है।' कवि ने भारत के व्यापारिक तथा व्यावसायिक दुर्दशा के लिए यहां के धनिकों को दोषी ठहराया है जो अपने धन का प्रयोग देश में उद्योग धंधे स्थापित करने में व्यय करने की अपेक्षा भोग विलास में व्यय करते हैं। यहां के धनिक प्रदर्शन में विश्वास रखते हैं और पढ़ने लिखने से दूर रहते हैं। राष्ट्र में उन्हें कोई नौकरी तो नहीं करनी है। अतः विभिन्न उत्सवों में वेश्याओं को बुलाकर अपना धन लुटाते हैं। इस पर दुख व्यक्त करते हुए कवि कहता है–

हां, नाच, भोग विलास हित उनका भरा भंडार है,
धिक् धिक् पुकार मश्दंग भी देता उन्हें धिक्कार है?
वे जागते हैं रात भर, दिन भर पड़े सोवें न क्यों?
है काम से ही काम उन को, दूसरे रोवें न क्यों?

कवि को हिन्दुओं में विद्या, कला कौशल, सभ्यता, संस्कृति का अभाव खटका। भारतीय धनिक की सोच पर भी उन्होंने कटाक्ष किया। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी, वही आज पद पद पर दूसरों का मुंह ताक रही है। धनिकों के पुत्र भी भोग विलास, मदिरा में अपना सारा धन गवां देते हैं, आज भारतीय केवल नौकरी करने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जो कवि के लिए चिंता का विषय है क्योंकि हम अपनी सुशिक्षा की अपेक्षा कर रहे हैं। कवि वर्तमान काल की शिक्षा के सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहता है– हे व्यर्थ वह शिक्षा कि जिस से देश की उन्नति न हो।

कवि ने वर्तमान खण्ड में कहा है कि देश के साहित्य में अश्लीलता के समावेश और उस के दुष्प्रभावों के साथ–साथ संगीत पर भी प्रहार किया है क्योंकि उस में भी भक्ति रस के स्थान पर अश्लीलता आ गई है। देश में अनेक सभाएं स्थापित हो गई जो केवल चंदा उगाई का काम करती हैं और जनता में भेद भाव बढ़ाने का काम कर रही है। कवि ने उपदेशकों, मन्दिरों के महन्त,

तीर्थ स्थलों के पण्डों, ब्राह्मणों, क्षत्रिय, वैश्य आदि के भ्रष्ट होने पर चिंता जताई है। राष्ट्र में ऐसी स्थिति के प्रति कवि सोचने को मजबूर हो गया है। यहां स्त्रियों की दुर्दशा और पतित होने का चित्रण भी किया गया है–

रखती यही गुण वे कि गन्दे गीत गाना जानती,
कुल, शील, लज्जा उस समय कुछ भी नहीं वे मानती।
हंसते हुए, हम भी अहो! वे गीत सुनते सब कहीं,
रोदन करो हे भाइयों! यह बात हंसने की नहीं।।

समाज में व्याप्त कुरीतियां जैसे बेजोड़ विवाह, अंध परम्परा, वर कन्या विक्रय, दहेज प्रथा मांगना खाना आदि पर भी अपने भाव विचार व्यक्त किये हैं। इस ओर "पुनर्जागरण काल में सदियों पुरानी जड़ताएं टूटी हैं।"

वास्तव में वर्तमान खण्ड में हिन्दू जाति के नैतिक पतन, बुद्धि, शौर्य, अपकर्ष का विस्तार से वर्णन किया है। देश में व्याप्त दारिद्रय, प्रति दिन पड़ने वाले अकाल, शासन द्वारा होने वाले अत्याचार, जनता के मनोबल की क्षति व कमी, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी, हिन्दू मुस्लिम दंगे और मार काट, नित्य फैलने वाले प्लेग आदि रोगों से होने वाला जन विनाश, व्यापार में विदेशी माल का प्रभुत्व, यहां के कला कौशल का लुप्त होना, अमीरों की स्वार्थपरता और विलासिता, उनकी सन्ता की उच्छृण्डता, स्त्री शिक्षा का अभाव और उनकी दुर्दशा, देशव्यापी घोर अशिक्षा, वर्तमान शिक्षा पद्धति से दासता की भावना में वृद्धि, साहित्य के स्तर में गिरावट, समाज के सभी वर्गों के चरित्र के ह्रास को प्रस्तुत करते हुए अत्यंत दुख, शोक आदि भाव प्रकट किये हैं। राष्ट्र में व्याप्त कुरीतियों, लोगों के पारस्परिक झगड़ों, उनमें व्याप्त नशाखोरी की आदत, अपने पुरखों को भूलना, अच्छी परम्पराओं से मुंह मोड़ना, अनुदारता, गृह कलह, व्यभिचार, आडम्बर आदि दुर्गुणों का घर करना आदि का वर्णन भी बड़ी तलखी के साथ किया है। इस प्रकार हिन्दू समाज में अनेक प्रकार की विकृतियां आ गई जिस के कारण हिन्दू की प्रताड़ना करते हुए कहना है–

हा! आर्य सन्तति आज कैसी अन्ध और असक्त है,
पानी हुआ क्या अब हमारी नाड़ियों का रक्त है?
संसार में हमने किया बस एक ही यह काम है
निज पूर्वजों का सब तरह डुबाया नाम है।।

कवि आर्य जाति में व्याप्त दुर्गुणों के सम्बन्धों में अपने भाव प्रकट किये हैं

दुःशीलता दासी हमारी, मूर्खता महिषी सदा।
है स्वार्थ सिंहासन हमारा, मोह मंत्र सर्वदा,
यों पाप पुर में राज पद हा! कौन पाना चाहता है?
चढ़कर गधे पर कौन जन बैकुण्ठ जाना चाहता?

अतः इनके काव्य को देखने से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र की स्थिति का चित्रण कवि ने किया है। जिसमें प्रत्येक वर्ग के स्त्री पुरूष का चिन्तन जुड़ा हुआ है और कवि चाहता है कि राष्ट्र की तरक्की के लिए सभी को एक होना होगा तभी कहीं जाकर राष्ट्र में एकता और अखण्डता की अलख जगाकर हम आगे बढ़ सकते हैं। ऐसी राष्ट्रवादी भावना प्रत्येक स्त्री पुरूष के बीच जब होगी तब उनमें समर्पण, त्याग, प्रेम, करूणा जैसे मनोवृत्तियों का जन्म होकर उन्नतिशील पथ पर बढ़ पाएंगी अन्यथा हम पथ भ्रष्ट हो जाएंगे जिससे राष्ट्र का नव निर्माण नहीं हो पाएगा।

संदर्भ

- मैथिलीशरण गुप्त–भारत भारती।

- मैथिलीशरण गुप्त–भारत भारती।
- मैथिलीशरण गुप्त–भारत भारती।
- मैथिलीशरण गुप्त–भारत भारती।
- डॉ0 विभा कुमारी–आधुनिक साहित्य–सं0 पृष्ठ सं0 153
- मैथिलीशरण गुप्त–भारत भारती।
- डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तव–समकालीन हिन्दी आलोचना।

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.